दैनिक जागरण 04-02-2014

भारत बढ़ाएगा ऑस्ट्रेलिया में गन्ने के रस का उत्पादन

- ब्रिसब्रेन स्थित क्वीन्सलैंड यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी के साथ नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट ने किया करार

कानपुर, जागरण संवाददाता : नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) के विशेषज्ञ अब ऑस्ट्रेलिया में गन्ने के रस का उत्पादन बढ़ाने में अपना सहयोग देंगे। ऑस्ट्रेलिया के ब्रिसब्रेन स्थित क्वींसलैंड यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी ने अपनी चीनी मिलों में गन्ने की पेराई के विकास के लिए एनएसआई के साथ करार किया है। जहां एक ओर ऑस्ट्रेलिया में जाकर यहां के विशेषज्ञ गन्ने के रस निकालने का प्रशिक्षण देंगे वहीं इंस्टीट्यूट के छात्र रॉ शुगर व सफेद चीनी बनाने का प्रशिक्षण पा सकेंगे। इस वर्ष संस्थान को आईएसओ प्रमाणित किया गया है।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक नरेन्द्र मोहन।

शुगर रिसर्च ऑस्ट्रेलिया की ओर से अनुसंधान परियोजनाओं के संचालन की फंडिंग के लिए इंस्टीट्यूट निदेशक डॉ. नरेंद्र मोहन को विशेषज्ञ नियुक्त किया गया है। एनएसआई परिसर में स्थापित चीनी मिल में गन्ने की पेराई के साथ शिक्षा व अनुसंधान को लेकर नए सत्र की तैयारियां इंस्टीट्यूट में शुरू हो गईं। इंस्टीट्यूट के निदेशक डॉ. नरेंद्र मोहन ने बताया कि विश्व का लगभग 60 फीसद बाजार रॉ शुगर का है, जिसके चलते इसकी मांग बढ़ रही है। अभी तक इसका उत्पादन विश्व में हो रही खपत की तुलना में बहुत कम है। सफेद चीनी मिलों में रॉ शुगर बनाने की दिशा में काम किया जा रहा है। यह फॉर्मूला मिल प्रबंधन तक भी पहुंचाया जाएगा।

खोई से बनेगा एथेनॉल

पेट्रोल में पांच फीसद मेथेनॉल के इस्तेमाल से इसकी खपत बढ़ती जा रही है। इसे देखते हुए वर्तमान समय में एक बिलियन एथेनॉल की जरूरत है। डॉ. नरेंद्र मोहन ने बताया कि अभी तक एथेनॉल का उत्पादन शीरे से होने के कारण देश में सिर्फ 0.6 फीसद एथेनॉल का उत्पाद ही हो रहा है। 2017 में इसकी खपत 20 फीसद और बढ़ने की संभावना जताई जा रही है।

आफलाइन भी भर सकेंगे फॉर्म

एनएसआई के प्रवेश परीक्षा फॉर्म पहली बार ऑफलाइन व ऑनलाइन जारी किए जाएंगे। पिछले साल ऑफलाइन व्यवस्था को बंद कर दिया गया था। 11 मार्च से जारी किए जाने वाले फॉर्म भरने की आखिरी तारीख 11 अप्रैल घोषित की गई है। 29 अप्रैल तक छात्र अपने प्रवेश पत्र ऑनलाइन प्राप्त कर सकते हैं। इस साल पहली बार 'सार्टिफिकेट कोर्स इन क्वालिटी कंट्रोल' विषय जोड़ा गया है।

राष्ट्रीय सहारा 04-02-2014

उपलब्धि 'एक्सियल ड्रेनेज रोलर' विकसित किया, जो चीनी उत्पादन बढ़ाने में करेगा मदद

एनएसआई ने विकसित की गन्ने से पूरा रस निकालने की तकनीक

कानपुर (एसएनबी)। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) ने चीनी मिलों के लिए 'एक्सियल ड्रेनेज रोलर' तकनीक विकसित की है, जिससे गन्ने से पूरा रस निकाला जा सकेगा। 0.1 प्रतिशत रस बढ़ने से 5 हजार टन पेराई क्षमता की मिल उत्पादन 8 हजार कुंतल तक पहुंचा सकती हैं। हर्ष की बात यह है कि आस्ट्रेलिया की क्वींसलैंड यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नालॉजी ने अपने देश की चीनी मिलों में इस तकनीक के इस्तेमाल में रुचि दिखायी है।

- नई व्यवस्था में मिल में एक साथ बन सकेगी सफेद और पीली चीनी
- आस्ट्रेलिया ने अपनी मिलों में नई तकनीक प्रयुक्त करने में दिखायी रुचि

संस्थान ने इस नई तकनीक को अपनी चीनी मिल में प्रायोगिक तौर पर आजमाया है, जहां सोमवार को पेराई कार्य की शुरुआत की गयी। संस्थान की चीनी मिल के संयंत्रों में कुछ फेरबदल कर एक साथ पीली व सफेद चीनी उत्पादन भी शुरू किया गया है। यह तकनीक इस लिहाज से महत्वपूर्ण साबित हो सकती है कि विश्व बाजार में करीब 60 फीसद पीली चीनी का ही कारोबार होता है, जिसे रिफाइंड कर बाजार में लाया जाता है। यह सफेद चीनी के मुकाबले सस्ती होती है, लेकिन इसका बाजार आसानी से मिल जाता है। संस्थान ने करीब 35 एकत्र क्षेत्रफल में गन्ना लगा रखा है, जिसकी पेराई इस चीनी मिल में की जायेगी।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में पत्रकारों से वार्ता करते निदेशक नरेंद्र मोहन।

प्रायोगिक चीनी मिल में गन्ना पेराई कार्य आरंभ किये जाने के अवसर पर संस्थान के निदेशक नरेन्द्र मोहन ने बताया कि आस्ट्रेलियाई चीनी मिलों के तकनीकी उन्नयन के लिए क्वींसलैंड यूनिवर्सिटी आफ टेक्नालॉजी, ब्रिसबेन ने रुचि दिखायी है। निदेशक ने बताया कि वर्तमान में चीनी मिलों में केवल सफेद चीनी या पीली चीनी का निर्माण किया जाता है। कहीं एक साथ पीली व सफेद चीनी का निर्माण नहीं किया जाता। नवविकसित तकनीक से अब यह भी संभव है। इसके लिए वर्तमान मशीनरी में मामूली फेरबदल करने होंगे। उन्होंने कहा कि इस तकनीक के सहारे देश की मांग के अनुरूप सफेद चीनी बनाकर हम पीली चीनी को विश्व बाजार में आसानी से बेच सकते हैं। पीली चीनी में सल्फर डाय आक्साइड का इस्तेमाल नहीं किया जाता है।

संस्थान को 'आईएसओ' प्रमाणपत्र

एनएसआई को 'आईएसओ' प्रमाणपत्र हासिल हुआ है, जो शिक्षा, परामर्श सेवाओं तथा चीनी उद्योग के लिए शर्करा मानक निर्धारित करने के संदर्भ में दिया गया है। इससे संस्थान की सेवाओं को मानक आधारित बनाने की राह प्रशस्त होगी।

गन्ने के साथ गेहूं की पैदावार

संस्थान के फार्म हाउस में रेज्ड बेड सीडर तकनीक से गन्ने के साथ गेहूं की खेती भी की जा रही है। इस तकनीक में ऊंची-नीची नालियां बनाकर ऊंचे पर गेहूं व नीचे गन्ने की पेड़ी लगायी जाती है। संस्थान करीब 5 एकड़ क्षेत्रफल में सह फसली खेती कर रहा है।

मैकेनिकल खेती

संस्थान के फार्म में गन्ने की खेती मैकेनिकल तरीके से की जा रही है। मंगलवार को मैकेनिकल गन्ना कटाई कार्य का प्रदर्शन विभिन्न चीनी मिलों के प्रतिनिधियों के समक्ष किया जायेगा।

हिन्दुस्तान 04-02-2014

एशिया के इस इकलौते संस्थान में रोज 100 टन गन्ने से बनेगी नौ टन चीनी, कैंपस के 31 एकड़ भूमि पर फसल

एनएसआई की मिल में गन्ने की पेराई शुरू

उपलब्धि

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

राष्ट्रीय शर्करा संस्था (नेशनल शुगर इन्स्टीट्यूट-एनएसाई) ने सोमवार से अपनी प्रायोगिक चीनी मिल में पेराई शुरू कर दी। यहां प्रतिदिन 100 टन गन्ने से नौ टन चीनी प्राप्त की जा सकती है। इस फैक्ट्री में पहली बार कच्ची चीनी (पीली चीनी) और सफेद चीनी के उत्पादन की व्यवस्था की गई है।

यह एशिया का इकलौता शिक्षण संस्थान है, जिसकी अपनी प्रायोगिक मिल है। संस्थान देश में एथनॉल उत्पादन बढ़ाने में भी मदद की तैयारी कर रहा है। इसे लेकर दिल्ली के विज्ञान भवन में बैठक हो चुकी है।

कभी कबाड़ हो चुकी मिल का स्वरूप बदल दिया गया है। करीब ढाई दशक बाद पहले से भी बेहतर तकनीक के साथ शुरू हुई मिल में ऐसे क्रशर का उपयोग किया गया है, जिससे चीनी की कुल मात्रा बढ़ती है। इसकी मदद से पांच हजार टन पेराई क्षमता वाली मिल को साल में कम से कम दो करोड़ रुपए का अतिरिक्त लाभ हो सकता है। निदेशक प्रोफेसर नरेन्द्र मोहन ने मिल में गन्ना डालकर इसकी शुरुआत की।

एनएसआई के कैंपस में 525 एकड़ जमीन है। इसमें से भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान के पास 160 एकड़ जमीन लीज पर है। चार एकड़ जमीन सीपीडब्ल्यूडी के पास है। बाकी जमीन एनएसआई के पास है। निदेशक ने बताया कि 31 एकड़ जमीन पर इस बार गन्ने की खेती की गई है। अब रेज्ड बेड सीडर तकनीक से इन खेतों में गन्ना और गेहूं एक साथ बोया जाएगा।

शुभारंभ

- एक्सियल ड्रेनेज रोलर तकनीक से बढ़ जाती है रिकवरी
- पांच हजार टन पेराई क्षमता वाली मिल को हो सकता दो करोड़ लाभ

नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट में शुगर मिल का उद्घाटन निदेशक नरेन्द्र मोहन ने किया। लंबे समय बाद छात्र-छात्राओं ने अपनी मिल में चीनी बनती देखी। • हिन्दुस्तान

कच्ची चीनी हुई कीमती

निदेशक ने बताया कि देश में चीनी की सालाना मांग 230 लाख टन है। 2011 में 263, 2012 में 243 और 2013 में 251 लाख टन उत्पादन हुआ था। चीनी की कीमतें स्थिर रखनी हैं तो इसका निर्यात भी जरूरी है। विदेशी बाजार में 60 फीसदी कच्ची चीनी की मांग है। बिना सल्फोटेशन (सल्फर से सफाई) वाली पीली चीनी तैयार करने में लागत कम आती है और कुछ कम कीमत पर विदेश में बिकती भी है। इसकी मांग लगातार बढ़ रही है।

ऑस्ट्रेलिया ने मांगी मदद

क्वींसलैण्ड यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, ब्रिसबेन ऑस्ट्रेलिया ने अपनी चीनी मिलों में गन्ने की पेराई के विकास के लिए संस्थान के विशेषज्ञों की सेवाएं मांगी हैं। यहां विकसित एक्सियल ड्रेनेज रोलर तकनीक अपने यहां उपयोग में लाने की इच्छा जताई है। इससे 0.1 फीसदी रिकवरी बढ़ जाती है। ऑस्ट्रेलिया में चीनी उत्पादन की संस्था ऑस्ट्रेलिया शुगर एसोसिएशन ने एनएसआई के निदेशक को अपनी एसोसिएशन में विशेषज्ञ नियुक्त किया है। यह संस्था चीनी मिलों को सुधार के लिए धनराशि उपलब्ध कराती है।

मिला आईएसओ

निदेशक ने बताया कि एनएसआई को शिक्षा, परामर्श सेवाओं और चीनी उद्योग में शर्करा मानक तैयार करने पर आईएसओ 9001:2008 • प्रमाण पत्र मिला है।

हिन्दुस्तान 04-02-2014

अबकी एनएसआई में नया कोर्स

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

राष्ट्रीय शर्करा संस्था (एनएसआई) में नए शिक्षा सत्र 2014-15 से प्रवेश की प्रक्रिया 11 मार्च से शुरू हो रही है। इस बार 10 पाठ्यक्रमों के लिए प्रवेश लिए जाएंगे। एक नया पाठ्यक्रम भी शुरू किया जा रहा है। पांच पाठ्यक्रमों में प्रवेश संयुक्त प्रवेश परीक्षा के माध्यम से और शेष में प्रवेश व्यक्तिगत साक्षात्कार के माध्यम से लिया जाएगा।

पीजी डिप्लोमा इन शुगर टेक्नालॉजी की 69 सीटें हैं। इसमें प्रवेश के लिए भौतिकी, गणित और रसायन विज्ञान में बीएससी या रसायन इन्जीनियरिंग में बैचलर डिग्री होना चाहिए। इसी तरह पीजी डिप्लोमा इन शुगर इन्जीनियरिंग के लिए 28, पीडी डिप्लोमा इन इण्डिस्ट्रयल फर्मेन्टेशन एण्ड अल्कोहल टेक्नालॉजी में 28 सीटें हैं।

शुगर ब्वॉइलिंग सर्टिफिकेट कोर्स में 57 सीटें हैं। पहली बार सर्टिफिकेट कोर्स इन क्वॉलिटी कन्ट्रोल शुरू किया जा रहा है, जिसमें 15 सीटें होंगी। इन सभी में प्रवेश संयुक्त प्रवेश परीक्षा के माध्यम से होगी।

इनमें इन्टरव्यू से प्रवेश

शुगर इन्जीनियरिंग सर्टिफिकेट कोर्स (15 सीटें), प्री हार्वेस्ट केन मैच्योरिटी सर्वे सर्टिफिकेट कोर्स (18), एफएनएसआई इन शुगर टेक्नालॉजी व शुगर केमिस्ट्री, एफएनएसआई इन शुगर इन्जीनियरिंग और एफएनएसआई इन फर्मेन्टेशन टेक्नालॉजी में प्रवेश के लिए इन्टरव्यू होंगे। इनमें सीटों की संख्या बाद में तय की जाएगी।

पहली बार बिहार में भी सेंटर

संयुक्त प्रवेश परीक्षा कानपुर, पटना, चेन्नई, दिल्ली, कोलकाता, और पूणे में होगी। बिहार में यह परीक्षा पहली बार हो रही है।

इन तिथियों को याद रखें

• ऑनलाइन फॉर्म सब्मिशन	11 मार्च 2014 से 11 अप्रैल 2014 तक
• प्रिन्ट भेजने की अन्तिम तिथि	29 अप्रैल 2014
• कैश पेमेंट पर फॉर्म	11 मार्च 2014 से 11 अप्रैल 2014 तक
• फॉर्म के लिए मनी ऑर्डर की अन्तिम तिथि	21 मार्च 2014
• स्वयं या डाक से फॉर्म भेजने की अन्तिम तिथि	11 अप्रैल 2014
• फॉर्म की कीमत	रुपए 1000, अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लिए 800 रुपए
• प्रवेश परीक्षा	08 जून 2014
• एनएसआई की वेबसाइट	http://nsi.gov.in

अमर उजाला 04-02-2014

एनएसआई से गन्ना पेराई सीखेगा आस्ट्रेलिया

कानपुर। ज्यादा चीनी उत्पादन के लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) की विकसित तकनीक आस्ट्रेलिया भी अपनाएगा। इसके लिए आस्ट्रेलिया के ब्रिसबेन स्थित क्वींसलैंड यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी ने एनएसआई से करार किया है। यह तकनीक है एक्सियल ड्रेनेज रोलर की। आस्ट्रेलिया की चीनी मिलों में इसका इस्तेमाल किया जाएगा। एक्सियल ड्रेनेज रोलर में दोनों तरफ छेद होने से पेराई में ज्यादा रस निकलता है। 0.1 फीसदी रस की रिकवरी बढ़ने से पांच हजार टन क्षमता वाली शुगर मिल अपना उत्पादन 3 हजार टन बढ़ा सकेगी। उधर, शिक्षा प्रणाली, परामर्श सेवाओं और चीनी उद्योग को शर्करा मानक वितरित करने की उपलब्धि के चलते राष्ट्रीय शर्करा संस्थान को आईएसओ सर्टिफिकेट से प्रमाणित किया गया है। इससे संस्थान की विभिन्न सेवाओं को मानक आधारित बनाने में सफलता मिलेगी।

अमर उजाला 04-02-2014

एनएसआई में सीसीक्यूसी कोर्स शुरू

कानपुर। नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट कानपुर में सत्र 2014-15 में सर्टिफिकेट कोर्स इन क्वालिटी कंट्रोल (सीसीक्यूसी) की शुरुआत की है। 12वीं में पीसीएम में 50 फीसदी से ऊपर अंक पाने वाले स्टूडेंट को टेस्ट के माध्यम से दाखिला मिलेगा। यह जानकारी एनएसआई के निदेशक नरेंद्र मोहन ने दी। इसके अलावा एएनएसई (एसटी), एएनएसआई (एसई), डीआईएफएटी और एसबीसीसी की भी तारीखें आ गई हैं। सीसीक्यूसी में करीब 15 सीटें हैं। वहीं एएनएसई एसटी में 69 सीटें, एएनएसई एसई में 28 सीटें सीसीक्यूसी, डीआईएफएटी में 28 और एसबीसीसी मे 57 सीटें हैं। एएनएसई (एसटी), एएनएसआई (एसई), डीआईएफएटी और एसबीसीस की परीक्षा आठ जून को चेन्नई, दिल्ली, कानपुर, कोलकाता, पटना और पूना में होगी। स्टूडेंट्स ऑनलाइन आवेदन करना चाहते हैं तो www.nsi.gov.in पर लॉगिन कर सकते हैं। 11 मार्च से ऑनलाइन आवेदन किए जा सकते हैं, वहीं ऑफलाइन आवेदन करने की अंतिम तिथि 11 अप्रैल है।

आज 04-02-2014

नौ टन प्रतिदिन चीनी का उत्पादन करेगा शर्करा संस्थान

31 एकड़ में गन्ने की बुवाई, गेहूं की फसल भी लेंगे, आस्ट्रेलियाई चीनी मिल के तकनीकि सहयोग करेंगे वैज्ञानिक

कानपुर, 3 फरवरी। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की प्रयोगशाला (चीनी मिल) में आज से गन्ने की पेराई शुरू कर दी गयी और अब शर्करा की चीनी मिल से ९ टन प्रतिदिन चीनी का उत्पादन होगा। इस वर्ष पहली बार संस्थान के विद्यार्थी भी रा शुगर व सफेद चीनी उत्पादन की प्रक्रिया देख और समझ सकेंगे। यह जानकारी संस्थान के निदेशक नरेन्द्र मोहन आज पत्रकारों को दी।

निदेशक ने बताया कि संस्थान के पास कई एकड़ कृषि भूमि है। शर्करा में ३१ एकड़ भूमि पर गन्ने की खेती करायी गयी। अब गन्ने की कटाई कर प्रयोगशाला में गन्ने की पेराई शुरू कर दी गयी है। कैंपस में लगी चीनी मिल की क्षमता भी १०० टन प्रतिदिन की है। लेकिन वर्तमान में सिर्फ ९ टन प्रतिदिन चीनी का उत्पादन शुरू कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि क्वीन्सलैण्ड यूनिवर्सिटी आफ टेक्नोलाजी क्विसलैंड आस्ट्रेलिया ने चीनी मिलों में गन्ने की पेराई के विकास के लिए संस्थान के वैज्ञानिकों की सेवायें लेने के लिए प्रपत्र आ चुका है लेकिन कुछ औपचारिकता भी शेष हैं। क्वीन्स लैण्ड यूनिवर्सिटी ने संस्थान में विकसित एक्सियल इनेज रोलर तकनीकि को अपनी चीनी मिलों में लगाने की इच्छा जाहिर की है। इस तकनीकि से गन्ने के रस की प्राप्ति में ०.१ फीसदी रिकवरी बढ़ने से ५ हजार टन पेराई क्षमता वाली मिल अपना उत्पादन ८ हजार कुंतल तक कर सकेगी। उन्होंने बताया कि सम्पूर्ण विश्व का लगभग ६० फीसदी बाजार रा शुगर का ही है। इसलिए देश को भी रा शुगर बनाना चाहिये। ताकि देश भी रा शुगर का निर्यात करने की कतार में खड़ा हो सके। चीनी उद्योग को भी वर्तमान सफेद चीनी की मिलों में रा शुगर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण संदेश भी दिया जा सके।

आस्ट्रेलियाई रिसर्च फण्डिंग के लिए विशेषज्ञ नियुक्त हुए

कानपुर, 3 फरवरी। संस्थान के निदेशक नरेंद्र मोहन को शुगर रिसर्च आस्ट्रेलिया की विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं के संचालन की फंडिंग के लिए विशेषज्ञ नियुक्त किया गया है। शुगर रिसर्च आस्ट्रेलिया चीनी उद्योग द्वारा संचालित एक कंपनी है जो आस्ट्रेलियाई चीनी उद्योग के लिए अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं के लिए धन मुहैया कराता है।